


---

# Tantroktam rAtrisUktam

——  
तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

——  

## Document Information



---

Text title : raatri suktam

File name : raatrisuukta2.itx

Category : sUkta, devii, otherforms, svara, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : NA, Aruna Narayanan

Proofread by : NA, Aruna Narayanan

Description-comments : A prayer to the Goddess for joyful sleep.

Latest update : November 15, 2020

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 21, 2020

*sanskritdocuments.org*



तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्



विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंसारकारिणीम् ।

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच -

त्वं स्वाहा त्वं स्वधात्वं छि वषट्कारः स्वरत्निका ।

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥ २ ॥

अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुश्रयार्था विशेषतः ।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा ॥ ३ ॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ।

त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते य सर्वदा ॥ ४ ॥

विसृष्टौ सृष्टिद्वयात्त्वम् स्थितिद्वया य पालने ।

तथा संलृतिद्वयान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥ ५ ॥

महाविद्या महाभाया महामेधा महास्मृतिः ।

महामोहा य भवती महादेवी महासुरी ॥ ६ ॥

प्रकृतिस्त्वं य सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ।

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहारात्रिश्च दारुणा ॥ ७ ॥

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव य ॥ ८ ॥

भङ्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी यङ्किणी तथा ।

शङ्गिनी यापिनी बाणभुशुण्डीपरिधायुधा ॥ ९ ॥

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ।

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥

यस्य किञ्चित् क्वचिद्भस्तु सदसद्भाषिलात्मिके ।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सात्त्वं किं स्तूयसे तदा ॥ ११ ॥

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यति यो जगत् ।

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिच्छेत् ॥ १२ ॥

विष्णुः शरीरग्रहणमडमीशान् अवे य ।

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥ १३ ॥

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ।

मोडयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुडैटभौ ॥ १४ ॥

प्रबोधं न जगत्स्वामी नीयतामभ्युतो लघु ।

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ मडासुरौ ॥ १५ ॥

॥ इति तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम् ॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

॥ इति ॥

### तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तं छिन्दी भावार्थ

जो षस विश्व की अधीश्वरी, जगत् को धारण करनेवाली, संसार का पालन और संसार करनेवाली तथा तेजःस्वरूप भगवान् विष्णु की अनुपम शक्ति हैं, उन्हीं भगवती निद्रादेवी की भगवान् ब्रह्मा स्तुति करने लगे ॥ १ ॥

ब्रह्माञ्ज ने कडा - देवि! तुम ही स्वाहा, तुम ही स्वधा और तुम ही वषट्कार हो । स्वर भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं । तुम ही ज्यनदायिनी सुधा हो । नित्य अक्षर प्रणव में अकार, उकार, मकार - इन तीन मात्राओं के अतिरिक्त जो बिन्दुरूपा नित्य अर्धमात्रा है, जिसका विशेषरूप से उच्चारण नहीं किया जा सकता, वह भी तुम ही हो । देवि! तुम ही संध्या, सावित्री तथा परम जननी हो ॥ २-३ ॥

देवि! तुम ही षस विश्व-ब्रह्माण्ड को धारण करती हो। तुम से ही षस जगत् की सृष्टि होती है । तुम ही से षसका पालन होता है और सदा तुम ही कल्प के अन्त में सबको अपना ग्रास बना लेती हो ॥ ४ ॥

जगन्मयी देवि! षस जगत् की उत्पत्ति के समय तुम सृष्टिरूपा हो, पालन काल में स्थितिरूपा हो तथा कल्पान्त के समय संसाररूप धारण करनेवाली हो ॥ ५ ॥

तुम ही मडाविद्या, मडामाया, मडामेधा, मडास्मृति, मडामोडरूपा, मडादेवी और मडासुरी हो ॥ ६ ॥

तुम ही तीनों गुणों को उत्पन्न करनेवाली सबकी प्रकृति हो । भयंकर कालरात्रि, मळारात्रि और मोळारात्रि भी तुम ही हो ॥ ७ ॥

तुम ही श्री, तुम ही ष्वरी, तुम ही ह्री और तुम ही बोधस्वरूपा बुद्धि हो । लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शान्ति और क्षमा भी तुम ही हो ॥ ८ ॥

तुम षड्गधारिणी, शूलधारिणी, घोररूपा तथा गदा, यक्र, शंभ और धनुष धारण करनेवाली हो । बाण, भुशुण्डी और परिघ - ये भी तुम्हारे अस्त्र हैं ॥ ९ ॥

तुम सौम्य और सौम्यतर हो - धतना ही नहीं, जितने भी सौम्य एवं सुन्दर पदार्थ हैं, उन सबकी अपेक्षा तुम अत्यधिक सुन्दरी हो । पर और अपर - सबसे परे रहनेवाली परमेश्वरी तुम ही हो ॥ १० ॥

सर्वस्वरूपे देवि! कहीं भी सत्-असत् रूप जो कुछ वस्तुओं हैं और उन सबकी जो शक्ति है, वह तुम ही हो । ऐसी अवस्था में तुम्हारी स्तुति क्या हो सकती है ? ॥ ११ ॥

जो इस जगत् की सृष्टि, पालन और संभार करते हैं, उन भगवान् को भी जब तुम ने निद्रा के अधीन कर दिया है, तब तुम्हारी स्तुति करने में यहाँ कौन समर्थ हो सकता है ? ॥ १२ ॥

मुञ्जको, भगवान् शंकर को तथा भगवान् विष्णु को भी तुमने ही शरीर धारण कराया है; अतः तुम्हारी स्तुति करने की शक्ति किसमें है ? ॥ १३ ॥

देवि! तुम तो अपने इन उदार प्रभावों से ही प्रशंसित हो । ये जो दोनों दुर्धर्ष असुर मधु और कैटभ हैं, इनको मोड़ में डाल दो और जगदीश्वर भगवान् विष्णु को शीघ्र ही जगा दो । साथ ही इनके भीतर इन दोनों मळान् असुरों को मार डालने की बुद्धि उत्पन्न कर दो ॥ १४-१५ ॥

॥ इस प्रकार तन्त्रोक्त रात्रिसूक्त सम्पूर्ण हुआ ॥

जो देवि सब प्राणियों में निद्रारूप से स्थित हैं,  
उनको नमस्कार, उनको नमस्कार, उनको बारंबार नमस्कार है ॥

Proofread by Aruna Narayanan

*Tantroktam rAtrisUktam*

pdf was typeset on November 21, 2020

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

